सम-सामयिक

घटना चक्र

अतिरिक्तांक

2019

उ.प्र., म.प्र., उत्तराखण्ड, छत्तीसगढ़, बिहार, झारखण्ड तथा राजस्थान की

सिविल जज

ए.पी.ओ. एवं एच.जे.एस.

परीक्षाओं हेतु उपयोगी

प्रिलिम्स पाइंटर

अध्ययन सामग्री एवं प्रश्नकोश

विधिशास्त्र

(Jurisprudence)

विधिशास्त्र
(JURISPRUDENCE)

विषय सूची

अध्याय		पृष्ठ संख्या
1.	**विधिशास्त्र**	
	(i) परिभाषा, प्रकृति एवं विस्तार	3-4
2.	**विधिशास्त्र की विचारधाराएं**	
	(i) विश्लेषणात्मक विचारधारा	4-8
	(ii) समाजशास्त्रीय विचारधारा	8-13
	(iii) ऐतिहासिक विचारधारा	13-17
	(iv) यथार्थवादी विचारधारा	17-18
	(v) विधि के विशुद्ध सिद्धांत	18-20
	(vi) प्राकृतिक विधि के सिद्धांत	20-25
3.	**विधि के स्त्रोत**	25-26
	(i) रूढ़ि	26-28
	(ii) पूर्वनिर्णय	28-34
	(iii) विधायन	34-37
4.	**विधिक संकल्पनाएं**	37-39
	(i) अधिकार एवं कर्तव्य	39-43
	(ii) व्यक्ति एवं विधिक व्यक्ति	43-50
	(iii) कब्जा	51-57
	(iv) स्वामित्व	57-62
5.	**विधि एवं विधिशास्त्र की महत्वपूर्ण कृतियां**	63-64

आमुख

विधिशास्त्र उत्तर प्रदेश एवं झारखंड न्यायिक सेवा परीक्षा का एक विषय है, जिससे पर्याप्त मात्रा में प्रश्न पूछे जाते हैं। यह शृंखला इन्हीं परीक्षाओं के दृष्टिगत तैयार की गई है, जिसमें विधिशास्त्र की विभिन्न संकल्पनाओं को मुख्यतः चार शीर्षकों के अंतर्गत सारांशित करने का प्रयास किया गया है। इस शृंखला के प्रश्नकोश में विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्नों को विभिन्न अध्यायों में प्रश्नोत्तर के रूप में समाविष्ट किया गया है। आशा है कि पाठकगण इस शृंखला से लाभान्वित होंगे।

अध्याय 1 : विधिशास्त्र

परिभाषा, प्रकृति एवं विस्तार

सामान्य अर्थ में 'विधिशास्त्र' आंग्ल भाषा के शब्द ''जूरिस्प्रूडेंस'' (Jurisprudence) शब्द का हिंदी रूपांतर है, जो दो शब्द युग्मों 'जूरिस' (Juris) और 'प्रूडेंशिया' (Prudentia) से मिलकर बना है। शब्द 'जूरिस' का अर्थ 'विधि' और 'प्रूडेंशिया' का अर्थ 'ज्ञान' से है। अतः 'विधिशास्त्र' अर्थात 'जूरिस्प्रूडेंस' का अर्थ **'विधि के ज्ञान'** से है।

विधिशास्त्र की सार्वभौमिक परिभाषा दिया जाना अत्यधिक कठिन कार्य है, क्योंकि यह विभिन्न समय-काल और विधिशास्त्रियों के ''विधि'' और ''ज्ञान'' की परिभाषा के अनुसार अलग-अलग रही है। अतः विधिशास्त्र जिस अर्थ का बोध कराता है, वह एक विकास क्रम का परिणाम है। ऐतिहासिक दृष्टिकोण में विधिशास्त्र की उत्पत्ति रोमन विधिक प्रणाली से मानी जाती है।

महान रोमन विधिशास्त्री **अल्पियन** ने विधिशास्त्र को ''दैवीय और मानवीय बातों का ज्ञान'' (The Knowledge of thing's divine and human) तथा ''सही और गलत का विज्ञान'' (The science of right and wrong) के रूप में परिभाषित किया है, जबकि एक अन्य विधिशास्त्री **पौलस** ने विधिशास्त्र को इस रूप में ग्रहण किया कि ''विधि नियम से अनुमित नहीं की जानी है, बल्कि नियम को विधि से अनुमित किया जाना है।'' विधि एवं विधिशास्त्र की इन विचारधाराओं ने परवर्ती विधिशास्त्रियों को 'विधिशास्त्र' के निर्वचन का आधार प्रदान किया और **हॉब्स, ब्लैकस्टोन, बेंथम, ऑस्टिन, हॉलैंड, सामंड, प्रो. एलेन** इत्यादि विधिशास्त्रियों ने उत्तरवर्तीकाल में विधिशास्त्र को क्रमशः आधुनिक नाम दिया।

वास्तव में राजतंत्र एवं लोकतंत्र की विश्वव्यापी अवधारणा ने विधिशास्त्र के अध्ययन क्षेत्र एवं इसकी विषय-वस्तु को भी प्रभावित किया। अस्तु प्रारंभिक विधिशास्त्रीय विचारधारा राजतंत्रीय संकल्पना पर आधारित होते हुए ईश्वरीय शक्ति (प्रकृति) से उद्‌भूत राजतंत्र एवं जनता अर्थात शासक एवं शासित पर केंद्रित रही तथा 'विधि एवं नैतिकता' के सम्मिलन पर विधिशास्त्रीय विवेचना की गई किंतु जैसे-जैसे लोकतांत्रिकता का संचार एवं विकास विश्व पटल पर हुआ विधि की आधुनिक परिभाषा के विकास के साथ-साथ विधिशास्त्रीय विवेचना एवं संकल्पना भी विकसित एवं प्रस्थापित हुई, जिनकी विस्तृत विवेचना विधिशास्त्रीय विचारधारा की विभिन्न शाखाओं के अध्ययन में की जाएगी।

संक्षेपतः विभिन्न विधिशास्त्रियों ने विधिशास्त्र एवं विधि को निम्न रूपों में परिभाषित किया है-

- ''विधिशास्त्र दैवीय और मानवीय बातों का ज्ञान.....सही और गलत का विज्ञान (Science of Just and Unjust) है।'' **—अल्पियन**
- ''विधिशास्त्र विधि का नेत्र है।'' **—लास्की**
- ''विधिशास्त्र मानव स्थापित (निश्चयात्मक) विधि का दर्शन है। यह दो प्रकार का होता है सामान्य विधिशास्त्र एवं विशिष्ट विधिशास्त्र। विधिशास्त्र का विज्ञान निश्चयात्मक विधि से संबंधित है। विधि की अच्छाई और बुराई से विधिशास्त्र का कोई सरोकार नहीं है।'' **—ऑस्टिन**
- ''विधिशास्त्र विधि का विज्ञान है यह तीन प्रकार का होता है-व्याख्यात्मक, विधिक इतिहास एवं विधान विज्ञान।'' **—सामंड**
- ''विधिशास्त्र के तीन प्रभाग हैं–विश्लेषणात्मक, ऐतिहासिक और नैतिक।'' **–सामंड**
- ''विधिशास्त्र नियमों की एक व्यवस्था है।'' **—एच.एल.ए. हार्ट**
- ''विधिशास्त्र विध्यात्मक विधि का प्रारूपक विज्ञान है। (Jurisprudence is Formal Science of positive law)। यह रचनात्मक विधि का रीतिबद्ध विज्ञान है।'' **-हॉलैंड**
- ''विधिशास्त्र विधि के आधारभूत सिद्धांतों का वैज्ञानिक विश्लेषण है (The Jurisprudence is the Scientific Synthesis of the essential principle of law)।'' **—एलेन**

विधिशास्त्र की उपर्युक्त परिभाषाओं का सार यही माना जा सकता है कि 'विधिशास्त्र 'विधि से संबंधित अध्ययन है, जिसका व्यापक ज्ञान एवं संशय-समाधान विधिशास्त्र की विभिन्न विचारधाराओं (Schools of Jurisprudence) के अध्ययन पर ही संभव है। यद्यपि विधिशास्त्र एवं विधि की संकल्पना इसकी विभिन्न विचारधाराओं में भिन्न-भिन्न प्रतीत होती है किंतु इस बात को

लगभग सभी विचारधारओं ने स्वीकार किया है कि विधिक प्रणाली की उत्पत्ति रोम से हुई जिसका विकास 'आंग्ल विधिशास्त्र ' के रूप में हुआ और इसका बहुमुखी विकास विश्व की अनेक विधिक प्रणालियों में देश की तात्कालिक स्थिति एवं आवश्यकता के अनुरूप हुआ, जिनका अवलोकन आगामी अध्यायों में किया जा सकता है।

प्रश्नकोश

Q. 'विधिशास्त्र' शब्द के निर्वचन में 'प्रूडेंशिया' का क्या अर्थ है?

A. **ज्ञान**।

Q. विधिशास्त्र की उत्पत्ति किस देश से मानी जाती है?

A. **रोम** से।

Q. किस विधिशास्त्री ने विधिशास्त्र को ''सही और गलत का विज्ञान'' तथा ''दैवीय और मानवीय बातों का ज्ञान'' कहा है?

A. **अल्पियन** ने।

Q. राष्ट्रीय विधि की अवधारणा किस विधिशास्त्री ने दी?

A. **हॉब्स** (इंग्लैंड) ने।

Q. ''विधिशास्त्र विध्यात्मक विधि का प्रारूपिक विज्ञान है'' किसने कहा है?

A. **हॉलैंड** ने।

Q. ''विधिशास्त्र विधि का नेत्र है।'' यह उक्ति किस विधिशास्त्री की है?

A. **लास्की** की।

Q. ''विधिशास्त्र अधिवक्ताओं की बहिर्मुखता है'' किसने कहा है?

A. **जूलियस स्टोन** ने।

Q. ''विधिशास्त्र मानव स्थापित विधि का दर्शन है''। यह कथन किस विधिशास्त्री की है?

A. **ऑस्टिन** की।

Q. ऑस्टिन के अनुसार, विधिशास्त्र का विज्ञान किससे संबंधित है?

A. **निश्चयात्मक विधि** से।

Q. ''विधिशास्त्र रचनात्मक विधि का रीतिबद्ध विज्ञान है''। यह कथन किसका है?

A. **हॉलैंड** का।

Q. ''विधिशास्त्र नियमों की एक व्यवस्था है।'' किस विधिशास्त्री ने यह कथन किया है?

A. **हार्ट** ने।

अध्याय 2 : विधिशास्त्र की विचारधाराएं

''विधिशास्त्र'' एवं ''विधि'' की संकल्पनाओं का निम्नलिखित विचारधारा के विधिशास्त्रियों ने व्याख्या प्रस्तुत किया है–

(1) विश्लेषणात्मक विचारधारा
(2) ऐतिहासिक विचारधारा
(3) समाजशास्त्रीय विचारधारा
(4) यथार्थवादी विचारधारा
(5) विधि के विशुद्ध सिद्धांत (वियना विचारधारा)
(6) प्राकृतिक विधि

विश्लेषणात्मक विचारधारा (Analytical School)

विश्लेषणात्मक विचारधारा का **मुख्य प्रवर्तक जॉन ऑस्टिन** (1790-1859) को माना जाता है। आंग्ल विधिशास्त्र के जनक (Father of English Jurisprudence) के नाम से विख्यात ऑस्टिन ने जर्मनी से रोमन विधि के वैज्ञानिक निरूपण का अध्ययन करने के पश्चात आंग्ल विधि का भी वैज्ञानिक विन्यास प्रस्तुत किया। ऑस्टिन ने अपने पहले व्याख्यान **''द प्रॉविंस ऑफ जूरिस्प्रूडेंस डिटरमिंड''** में विधि की प्रकृति और परिधि का विवेचन किया और **''ए प्ली फॉर कॉन्स्टीट्यूशन''** नामक कृति में 'विधिशास्त्र' पर व्यापक चर्चा की, जो वास्तव में **'ग्रे'** की पुस्तक **''ऑन पार्लियामेंटरी गवर्नमेंट''** का उत्तर था।

ऑस्टिन ने विधिशास्त्र के अध्ययन का विषय-क्षेत्र केवल विध्यात्मक विधि (Positive law) को बनाया और इसके अध्ययन की रीति में 'विश्लेषणात्मक रीति'' को अपनाया। इसीलिए विधिशास्त्र की इस विचारधारा को विध्यात्मवाद, विश्लेषणात्मक, विश्लेषणात्मक विध्यात्मवाद तथा **प्रो. एलेन** के शब्दों में ''आज्ञात्मक विचारधारा'' (Imperative School) भी कहते हैं।

ऑस्टिन ने अपनी विधिक संकल्पना इस बात पर केंद्रित की है कि ''केवल विध्यात्मक विधियां ही विधिशास्त्र की उचित विषय-वस्तु हैं''। पुनः विधि को ऑस्टिन ने दो वर्गों में विभाजित किया–

(i) **दैवी विधियां**–ईश्वर द्वारा मानव के लिए निर्मित विधियां।

(ii) **मानव विधियां**–मनुष्य द्वारा मनुष्य के लिए निर्मित विधियां।

ऑस्टिन ने मानव विधियों को भी दो भागों में विभक्त किया है–

(1) **विध्यात्मक विधियां**–ऐसी विधियां जो राजनीतिक रूप में वरिष्ठ द्वारा अपनी हैसियत में अथवा राजनीतिक रूप में वरिष्ठ न होने वाले व्यक्तियों द्वारा उन्हें प्रदत्त विधिक प्राधिकार के अधीन बनाई जाती हैं और केवल यही विधियां ही विधिशास्त्र की उचित विषय-वस्तु हैं। जैसे- संप्रभु का आदेश।

(2) **अन्य विधियां**–उपर्युक्त के सिवाय अन्य विधियों को ऑस्टिन ने इस श्रेणी में रखते हुए उन्हें लाक्षणिक रूप में विधि की संज्ञा दी है, जैसे- अंतरराष्ट्रीय विधि, फैशन अथवा सम्मान संबंधी विधियां। इन्हें अनुचित तौर पर विधि कहा गया है।

ऑस्टिन का 'विधिशास्त्र' इस केंद्र बिंदु पर केंद्रित है कि विधि संप्रभु का समादेश है.....विधिशास्त्र का विषय विध्यात्मक विधि, जिसे सहज में और कड़ाई से ऐसा कहा जाता है; अथवा राजनीतिक वरिष्ठों द्वारा राजनीतिक अवरों के लिए बनाई गई विधि है, जिसका पालन करना अवरों का कर्तव्य है और जिसकी अवज्ञा पर वे अनुशास्ति के भागी होंगे। अतः ऑस्टिन की विधिशास्त्रीय अवधारणा में तीन प्रमुख तत्व अंतर्निहित माने जाते हैं–

(1) **समादेश** (Command)

(2) **कर्तव्य** (Duty)

(3) **अनुशास्ति** (Sanction)

अर्थात् प्रत्येक विधि एक समादेश है, जो एक कर्तव्य अधिरोपित करता है, जो अनुशास्ति द्वारा प्रवृत्त कराया जाता है। अतः प्रत्येक समादेश विधि नहीं होगा अपितु केवल वही सामान्य समादेश ही विधि है, जो आचरण विधा को बाध्य बनाता है। ऑस्टिन ने समादेश के तीन अपवाद बताए, जो समादेश न होते हुए भी विधिशास्त्र की विषय-वस्तु माने जाते हैं-

(i) घोषणात्मक विधियां अथवा स्पष्टीकारक विधियां

(ii) निरसन हेतु निर्मित विधियां

(iii) अपूर्ण बाध्यता वाली विधियां

ऑस्टिन का स्पष्ट मत है कि विधि का आधार वरिष्ठ (संप्रभु) की शक्ति है न कि आचारशास्त्र (Ethics) अथवा प्राकृतिक न्याय के सिद्धांत (Principles of Natural Justice) और चूंकि ऑस्टिन ने विश्लेषण को विधिशास्त्र का मुख्य साधन माना है, इसलिए इसे विश्लेषणात्मक विचारधारा का भी नाम दिया गया है, जिसका मूल मंत्र यह है कि विधि का सावधानी से अध्ययन और विश्लेषण किया जाना चाहिए और उसमें अंतर्भूत सिद्धांतों को निकाला जाना चाहिए। ऑस्टिन, हॉब्स की संप्रभुता की विधिक अवधारणा से प्रभावित रहे, जिसका समर्थन बर्कलैंड ने भी किया। यद्यपि ऑस्टिन के पूर्ववर्तीकाल के विधिशास्त्रियों ने ऑस्टिन की विधिशास्त्रीय विचारधारा की आलोचनाएं की हैं, किंतु यह भी सत्य है कि ऑस्टिन ने अपने उत्तरवर्ती विधिशास्त्रियों यथा- जर्मी बेंथम, हॉलैंड, सामंड, एलेन, केल्सन एवं हार्ट आदि को विधि संबंधी अवधारणा पर बहस के लिए मंच प्रदान किया। ऑस्टिन की कृति **''प्रॉविंस ऑफ जूरिस्प्रूडेंस डिटरमिंड''** आज भी विधिशास्त्र की एक महान कृति मानी जाती है। इसीलिए एलेन ने ऑस्टिन के बारे में कहा है कि **'ऑस्टिन विधिशास्त्र में ताड़ का वृक्ष हैं'** और इनकी विचारधारा आदेशात्मक है। ऑस्टिन के मुख्य आलोचक ओलिवर क्रोना ने भी ऑस्टिन को आधुनिक विध्यात्मक चिंतन का अग्रदूत माना है।

ऑस्टिन की विचारधारा की इस बात पर आलोचना की गई कि संप्रभु की विद्यमानता सर्वव्यापी नहीं है और यह परिवर्तित होती रहती है। अतः समादेश का सिद्धांत मान्य नहीं है क्योंकि यह एक कृत्रिम विधि है और केवल सभ्य समाज पर ही लागू होती है, जिसमें रूढ़ियों, अंतरराष्ट्रीय विधियों, विशेषाधिकार प्रदान करने वाली विधियों, पूर्वनिर्णयों (न्यायाधीश निर्मित विधियों), कन्वेंशनों आदि की उपेक्षा की गई है, जो कि किसी न किसी रूप में विधि के रूप में आज भी मान्य होते हैं और यह भी कि केवल अनुशास्ति ही विधि-अनुपालन का एकमात्र साधन नहीं है।

परिणामतः विश्लेषणात्मक विचारधारा के उत्तरवर्ती विधिशास्त्रियों, जिनमें जर्मी बेंथम, ग्रे, सामंड, हॉलैंड, हार्ट,

एलेन और केल्सन आदि मुख्य हैं, ने इस विचारधारा को और अधिक स्पष्ट, उन्नत और विकसित किया, जिसके कारण विधि की यथार्थवादी विचारधारा (Realist School) और विधि के विशुद्ध सिद्धांत (Pure theory of law) जैसी विधिशास्त्रीय विचारधाराओं का मार्ग प्रशस्त हुआ।

विधि की विश्लेषणात्मक शाखा के प्रवर्तकों में से एक ब्रिटिश विधिशास्त्री **जर्मी बेंथम** ने राजनैतिक एवं नैतिक दोनों क्षेत्रों में उपयोगितावादी सिद्धांत लागू करते हुए उपयोगिता को सुख का पर्यायवाची माना और **''अधिकतम व्यक्तियों के अधिकतम सुख'' (Greatest Happiness of the Greatest Numbers)** की अवधारणा प्रदान की। इनकी कृति **''द लिमिट्स ऑफ जूरिस्प्रूडेंस डिफाइंड''** में विधि का उद्देश्य 'अधिकतम लोगों का अधिकतम सुख' को बताया गया है। इन्होंने विधिशास्त्र को दो भागों में विभाजित किया–

(i) **व्याख्यात्मक-प्राधिकारिक** (स्थानीय व सार्वभौमिक) व **अप्राधिकारिक**।

(ii) **निश्चयात्मक या मूल्यांकनात्मक**

इनके सिद्धांत को **'उपयोगितावाद का सिद्धांत** 'अथवा **'उपयोगितावादी व्यक्तिवाद'** की संज्ञा दी जाती है।

इस विचारधारा के एक अन्य विधिशास्त्री एच.एल.ए. हार्ट ने विधिशास्त्र को नियमों की एक व्यवस्था मानते हुए निश्चयात्मक विधि को न्याय तथा नैतिकता से संयुक्त माना है। अपनी कृति **''कॉन्सेप्ट ऑफ लॉ''** में **हार्ट** ने विधि को प्रमुख एवं गौण नियमों का योग के रूप में व्याख्यायित किया है और ऑस्टिन के मत के विपरीत यह मत व्यक्त किया है कि विधि एवं नैतिकता में घनिष्ठ संबंध होता है तथा विधि का अधिरचनावादी दृष्टिकोण **समादेश**, **अनुशास्ति** एवं **संप्रभुता** की त्रिवेणी है, किंतु विधि में बाध्यता, प्रपीड़न तथा धमकी निहित होती है। इनकी विचारधारा को विध्यात्मवाद के नाम से जाना जाता है।

सामंड ने विधिशास्त्र को तीन भागों में विभाजित किया–

(1) विश्लेषणात्मक, (2) ऐतिहासिक और (3) नैतिक।

सामंड ने विधि के संहिताकरण पर बल देते हुए कहा कि समस्त विधि संग्रह को अधिनियमित विधि के रूप में बदलने की प्रक्रिया ही संहिताकरण है। सामंड का मानना है कि ''न्यायालयों द्वारा मान्य और कार्यान्वित किए गए नियम विधि हैं।''

हॉलैंड ने विधिशास्त्र को रचनात्मक विधि का रीतिबद्ध विज्ञान माना है।

प्रश्नकोश

Q. ऑस्टिन की संप्रभुता की अवधारणा किस व्यक्ति के विचारों से प्रभावित है?

A. **हॉब्स** ।

Q. विश्लेषणात्मक विचारधारा का मुख्य प्रवर्तक कौन है?

A. **जॉन ऑस्टिन**।

Q. किस विधिशास्त्री को आंग्ल विधिशास्त्र का जनक माना जाता है?

A. **ऑस्टिन** को।

Q. ऑस्टिन के अनुसार, विश्लेषणात्मक प्रमाणवाद के मुख्य मान्य मत क्या हैं?

A. (i) विधि की प्रकृति समादेशों की होती है।

(ii) विधि **'जो है'** और **'जैसी होनी चाहिए'** में अंतर किया जाना चाहिए।

(iii) विधि की अवधारणाओं का विश्लेषण आलोचनात्मक मूल्यांकन से भिन्न होता है।

Q. ऑस्टिन के अनुसार, अधिरचनावादी विधि का क्या अर्थ है?

A. **विधि** जैसी है।

Q. किस विधिशास्त्री ने विधिशास्त्र को 'सामान्य और विशिष्ट' दो भागों में विभाजित किया है?

A. **ऑस्टिन** ने।

Q. आधुनिक अर्थ में 'प्रत्यक्षवाद' की नींव किसने रखी?

A. **ऑस्टिन** ने।

Q. ऑस्टिन की विधिशास्त्रीय परिभाषा के मुख्य तत्व क्या हैं?

A. (i) **संप्रभुता**, (ii) **समादेश** और (iii) **अनुशास्ति**।

Q. ''विधिशास्त्र निश्चयात्मक विधि से संबंधित विज्ञान है।'' यह कथन किसका है?

A. **ऑस्टिन** का।

Q. ''प्रॉविंस ऑफ जूरिस्प्रूडेंस डिटरमिंड'' नामक कृति का लेखक कौन है?

A. **ऑस्टिन**।

Q. ऑस्टिन के अनुसार, संप्रभुता की मुख्य विशेषता क्या होती है?

A. यह सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों होनी चाहिए।

Q. ''विधि संप्रभु का समादेश है, जो कर्तव्य अधिरोपित करता है और जिसको शास्ति से बल मिलता है।'' यह कथन किसका है?

A. **ऑस्टिन** का।

Q. ऑस्टिन के अनुसार, विधि की कौन-सी श्रेणियां हो सकती हैं?

A. (i) उचित रूप से कही जाने वाली विधि तथा (ii) अनुचित रूप से कही जाने वाली विधि।

Q. ऑस्टिन ने किसे विधि का अनिवार्य तत्व नहीं माना है?

A. आदर्श और नैतिकता को।

Q. ''विधि को नैतिकता से अलग रखना चाहिए। विधिशास्त्र के विज्ञान का संबंध विधि की उपयोगिता के उद्देश्य से नहीं है।'' यह विचार किसके हैं?

A. **ऑस्टिन** के।

Q. ''ऑस्टिन विधिशास्त्र में ताड़ का वृक्ष है।'' यह कथन किसने कहा है?

A. **सी.के. एलेन** ने।

Q. ऑस्टिन की विश्लेषणात्मक विचारधारा को किस विधिशास्त्री ने ''आदेशात्मक विचारधारा'' की संज्ञा दी है?

A. **सी.के. एलेन** ने।

Q. ''ऑस्टिन का सिद्धांत वृत्तिक कारणीय है। विधि विधि है, क्योंकि यह संप्रभु के द्वारा बनाई गई है। संप्रभु संप्रभु है, क्योंकि वह विधि बनाता है।'' यह मत किस विधिशास्त्री ने व्यक्त किया है?

A. **बर्कलैंड** ने।

Q. किस विधिशास्त्री को ऑस्टिन से एक कदम आगे माना जाता है?

A. **केल्सन** को।

Q. विधि में न्यूनतम नैतिकता रहनी चाहिए। यह कथन किसका है?

A. **लॉर्ड डेवलिन** का।

Q. किसने कहा था ''समस्त विधि संग्रह को अधिनियमित विधि के रूप में बदलने की प्रक्रिया को संहिताकरण कहते हैं''?

A. **सामंड** ने।

Q. किसने विधिशास्त्र के तीन वर्गीकरण किए (i) विश्लेषणात्मक ऐतिहासिक और (iii) नैतिक?

A. **सामंड** ने।

Q. किस विधिशास्त्री ने विधिशास्त्र को दो भागों में विभाजित किया-(i) व्याख्यात्मक विधिशास्त्र और (ii) निश्चयात्मक विधि-शास्त्र?

A. **जर्मी बेंथम** ने।

Q. किसके विधिक दर्शन को ''उपयोगितावादी व्यक्तिवाद'' अथवा ''व्यक्तिवादी उपयोगितावाद'' की संज्ञा दी जाती है?

A. **जर्मी बेंथम** (बेंथम का कथन है कि ''विधिशास्त्र का उद्देश्य 'उपयोगिताओं (सुखों) को अधिकतम लोगों के अधिकतम हित' नामक तराजू में तौलना है'')।

Q. ''बहुजन हिताय'' (अधिक से अधिक लोगों का अधिक से अधिक कल्याण) नामक सिद्धांत (उपयोगितावाद) का प्रणेता किसको कहा जाता है?

A. **बेंथम** को।

Q. कौन विधिशास्त्री विधिशास्त्र को ''नियमों की एक व्यवस्था'' के रूप में देखता है?

A. **एच.एल. हार्ट**।

Q. ''विधि प्रमुख एवं गौण नियमों का योग है'' यह कथन किसका है?

A. **एच.एल.ए. हार्ट** का (पुस्तक 'कॉन्सेप्ट ऑफ लॉ' में)।

Q. विधि के अधिरचनावादी दृष्टिकोण के बारे में किसने कहा कि 'यह समादेश, अनुशास्ति एवं संप्रभुता की त्रिवेणी है''?

A. **हार्ट** ने।

Q. हार्ट का विधि विश्लेषण किनके बीच प्रभेद करता है?

A. आभारी, बाध्य होना और आभार रखना के बीच में।

Q. ''द कॉन्सेप्ट ऑफ लॉ'' नामक पुस्तक का लेखक कौन है?

A. **एच.एल.ए. हार्ट**।

Q. विश्लेषणात्मक प्रत्यक्षवाद के मुख्य विधिशास्त्री कौन हैं?

A. ऑस्टिन, केल्सन एवं एच.एल.ए. हार्ट।

Q. ''वकीलों का कार्य शब्दों से है, ये उनकी कला के लिए कच्चे माल हैं'' किसने कहा है?

A. **जूलियस स्टोन** ने।

Q. प्रमाणवाद के आधुनिक अर्थ की नींव किसने रखी?

A. **बेंथम** ने।

Q. ''प्रकृति ने मानव को सुख एवं दु:ख के साम्राज्य के अधीन कर रखा है।'' यह किस विधिशास्त्री ने कहा है?

A. ब्रिटिश विधिशास्त्री **बेंथम** ने।

Q. 'द लिमिट्स ऑफ जूरिस्प्रूडेंस डिफाइंड' नामक पुस्तक के मूल लेखक कौन हैं?

A. **बेंथम**।

समाजशास्त्रीय विचारधारा (Sociological School)

विधिशास्त्र की समाजशास्त्रीय विचारधारा के अध्ययन का मुख्य क्षेत्र विधि और समाज का एक-दूसरे पर प्रत्यक्ष प्रभाव तथा अंतर्संबंध है। वस्तुत: उन्नीसवीं शताब्दी का परिवर्तित राजनीतिक दर्शन, विज्ञान के नए सिद्धांत, औद्योगिक क्रांति, नवीन अर्थशास्त्रीय चिंतन और अन्य सामाजिक विज्ञानों ने समाजशास्त्रीय विचारधारा को भूमिका प्रदान किया। इन सबमें साम्यवाद एवं समाजवाद का उदय, प्राणी विकास की कायिक विकास संबंधी अवधारणाओं ने भी इस शाखा को प्रभावित किया।

ऑगस्ट काम्टे (1786-1857) को **समाजशास्त्रीय विचारधारा** का **अग्रदूत** माना जाता है, जिन्होंने सर्वप्रथम 'समाजवाद' शब्द का प्रयोग किया। इसके बाद अनेक विचारकों ने इस शाखा में योगदान दिया और विधि तथा विधिशास्त्र की अवधारणा प्रस्तुत की जिसमें **हर्बर्ट स्पेंसर**, **डर्कहेम, ड्यूगिट, गीयर्क, इहरिंग, यूगेन एहरलिच, रॉस्को पाउंड, बेवर, कार्ल टेनर** और **पुश्किन** आदि विधिशास्त्री मुख्य हैं।

ऑगस्ट काम्टे ने वैज्ञानिक विध्यात्मवाद (Scientific Positivism) की नींव रखते हुए अपना मत व्यक्त किया कि **समाज** एक **कायिक तंत्र** की भांति है और यह तभी प्रगति कर सकता है जब इसका मार्गदर्शन वैज्ञानिक सिद्धांतों द्वारा किया जाए। इस धारणा ने डर्कहेम और ड्यूगिट को काफी प्रभावित किया जिसने आगे चलकर **''सामाजिक समेकता''** का सिद्धांत प्रतिपादित किया। इसी क्रम में **हर्बर्ट स्पेंसर** (1820-1903) ने **कायिक सिद्धांत** (Organic Theory) प्रतिपादित किया, जिसे प्रोफेसर एलेन ने निम्न शब्दों में व्यक्त किया है–

''कायिकता की पारस्परिक निर्भरता का समाजशास्त्रीय पहलू में अर्थ है, सभ्य समाज के समस्त सदस्यों का पारस्परिक संबंध और उत्तरदायित्व की भावना का वितरण जो उससे बहुत बढ़कर होता है, जितना कि 'संप्रभु और प्रजा' सूत्र के भीतर आ सकता है''।

समाजशास्त्रीय विचारधारा की निम्नलिखित उपशाखाएं हैं, जिनके अंतर्गत यह शाखा स्थापित, विकसित और पल्लवित हुई–

1. सामाजिक समेकता (Social Solidarity) का सिद्धांत-**ड्यूगिट**
2. सामूहिकता का सिद्धांत (Theory of Associations) **- गीयर्क**
3. सामाजिक उपयोगितावाद का सिद्धांत (Theory of Social Utilitarianism) **- इहरिंग**
4. विधिक मान (Legal Norms) **- एहरलिच**
5. सामाजिक अभियांत्रिकी (Social Engineering) **-रॉस्को पाउंड**

1. सामाजिक समेकता का सिद्धांत

डर्कहेम, जो कि ऑगस्ट काम्टे का शिष्य था, से प्रभावित होकर ड्यूगिट (1859-1928) ने सामाजिक समेकता (Social Solidarity) का सिद्धांत प्रतिपादित किया। ड्यूगिट के अनुसार, प्रत्येक व्यक्ति की सामान्य आवश्यकताएं होती हैं जिनकी पूर्ति पारस्परिक सहायता से होती है और व्यक्ति की असामान्य आवश्यकताओं की पूर्ति सेवाओं के आदान-प्रदान से होती है, जिसके लिए श्रम-विभाजन एक अनिवार्य तथ्य है। व्यक्तियों की यह पारस्परिक -निर्भरता ही सामाजिक समेकता है और विधि का लक्ष्य इसकी पूर्ति करना हैं।

ड्यूगिट के अनुसार ''विधि एक ऐसा नियम है, जिसे मनुष्य किसी श्रेष्ठतर सिद्धांत, चाहे वह जो कुछ भी हो, भलाई, हित, या सुख के कारण नहीं, अपितु तथ्यों की विवशता के कारण धारण करते हैं क्योंकि वे समाज में रहते हैं और समाज में ही रह सकते हैं।'' ड्यूगिट ने सामाजिक समेकता के सिद्धांत के अंतर्गत निम्नलिखित विधिक अवधारणाएं प्रस्तुत की हैं–

(i) संप्रभुता की अवधारणा पर आक्षेप करते हुए ड्यूगिट ने कहा कि व्यक्तियों और समस्त संगठनों के कार्य-कलापों के संबंध में निर्णय की कसौटी सामाजिक समेकता है, न कि संप्रभुता, क्योंकि राज्य भी एक संगठन मात्र है, जो उन व्यक्तियों की इच्छा की अभिव्यक्ति है, जो शासन करते हैं और वे भी सामाजिक समेकता को सुनिश्चित करने के कर्तव्याधीन हैं।

(ii) विधायक विधि का निर्माण नहीं करता अपितु समाज समूह की चेतना द्वारा निर्मित न्यायिक-मानक को अभिव्यक्ति मात्र प्रदान करता है।

(iii) प्राइवेट विधि और लोक विधि में कोई अंतर नहीं है और दोनों ही एक ही उद्देश्य अर्थात् सामाजिक -समेकता की पूर्ति करते हैं (केल्सन के समान)।

(iv) व्यक्ति का एकमात्र अधिकार जो हो सकता है, वह सदैव अपने कर्तव्यों को करने का है। विधि का सार-तत्व कर्तव्य है।

यद्यपि राज्य अर्थात संप्रभुता, विधि और अधिकारों एवं कर्तव्यों की ड्यूगिट ने एक नवीन अवधारणा प्रस्तुत की जिसने किसी न किसी रूप में परवर्ती विधिशास्त्रियों यथा हौरु, रिनार्ड आदि को 'सांस्थानिक सिद्धांत' (Institutional Theory) प्रतिपादित करने में काफी योगदान दिया, फिर भी निम्नलिखित बिंदुओं पर इसके सिद्धांत की आलोचना की जाती है–

(i) सामाजिक समेकता एक प्राकृतिक विधि सिद्धांत है। अत: आलोचकों का कथन है कि ड्यूगिट ने प्राकृतिक विधि को द्वार से बाहर निकाला किंतु खिड़की के द्वारा इसे भीतर आने दिया।

(ii) सामाजिक समेकता का निर्धारण अंततः न्यायाधीशों को सौंप दिया जाना इस सिद्धांत की एक दुर्बलता है और इसका निर्वचन विषय-रूप प्रयोजनों के लिए किया गया।

(iii) ड्यूगिट ने विधि की अवधारणा **'है'** और **'होनी चाहिए'** में अंतर स्पष्ट नहीं किया और राज्य के विस्तारित कार्य-कलाप की उपेक्षा की।

(iv) सामाजिक समेकता के सिद्धांत में अनेक असंगतियां हैं।

2. सामूहिकता एवं संस्थागत सिद्धांत

जर्मन विधिशास्त्री गीयर्क ने 'समूह व्यक्तित्व की वास्तविकता'' (Reality of group personality) तथा फ्रांसीसी विधिशास्त्री हौरु ने 'संस्थागतता के सिद्धांत' (Theory of Institutionality) का प्रतिपादन किया। गीयर्क ने विधिक इतिहास का अध्ययन एक सामाजिक और विधिक प्रत्यय वस्तु के रूप में संघों और समूहों पर विशेष ध्यान देते हुए किया। उन्होंने समुदाय की कायिक संकल्पना प्रस्तुत की और यह मत व्यक्त किया कि एक सामाजिक और विधिक सत्ता के रूप में समूह का वास्तविक व्यक्तित्व होता है, जो राज्य द्वारा न तो रियायत है और न ही राज्य की मान्यता पर आधारित।

इसी प्रकार हौरु ने भी संस्था का निर्माण और विकास, उसके व्यक्तित्व तथा राज्य से उसके संबंधों पर अपना अध्ययन केंद्रित किया, जिसने विधिशास्त्रीय चिंतनों के एक नए विचार को प्रेरित किया।

3. सामाजिक उपयोगितावाद

इहरिंग (1818-1892) ने अपने पूर्ववर्ती ऑस्टिन के विध्यात्मवाद तथा बेंथम व मिल के उपयोगितावाद को समेकित करते हुए अपनी विधिक अवधारणा प्रस्तुत की कि ''विधि समाज के जीवन की स्थितियों की गारंटी है, जो राज्य की बाध्यता की शक्ति द्वारा